श्री श्रेयांसनाथ विधान

रचयित्री
गणिनीप्रमुख
आर्यिका ज्ञानमती

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 473
ISBN-978-93-84003-84-5

श्री श्रेयांसनाथ विधान

–रचयित्री –

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

108 फुट विशालकाय भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव के लिए मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पधारीं पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के 82वें जन्मदिवस आश्विन शुक्ला पूर्णिमा (27 अक्टूबर 2015) के शुभ अवसर पर प्रकाशित।

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com
Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2541, आश्विन शुक्ला 15	मूल्य
1100 प्रतियाँ	27 अक्टूबर 2015, शरद पूर्णिमा	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादकः–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

वर्तमान में सभी मनुष्यों का जीवन मंगलमयी हो, इसके लिए देवदर्शन, भगवान का अभिषेक, पूजन, भगवान की भक्ति, मण्डल विधानों का आयोजन मंगल साधन हैं। जिनेन्द्र देव की भक्ति, स्तुति कर्मनिर्जरा में विशेष कारण है। भक्त भगवान की भक्ति करते-करते एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। पूज्य माताजी हमेशा अपने प्रवचनों में कहती हैं प्रत्येक प्राणी की आत्मा भगवान आत्मा है। जैसे दूध में घी विद्यमान है वैसे ही प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम को पाकर, पूरे विश्व में ज्ञान का अलख जगाने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

वर्तमान समय में देखते हैं कि जब हर संसारी प्राणी दिन-रात अपने सांसारिक सुख साधनों को प्राप्त करने के लिय तन-मन से पूर्णरूपेण धनवृद्धि के लिये प्रयासरत रहता है। वहाँ उनके पास कुछ समय भी धर्म कार्यों के लिये शेष नहीं है। हर समय भोगोपभोग की सामग्री को एकत्र करने में ही उनका ध्यान रहता है। कई जन्मों के पुण्य उदय से ही मनुष्य का जिनधर्म एवं जिनवाणी के प्रति अनुराग उत्पन्न होता है। जीव के शुभ-अशुभ भाव ही उसे तदनुसार फल देने वाले होते हैं। श्रावकों के लिये षट् आवश्यक कर्तव्यों में देवपूजा, स्वाध्याय आदि भी कहे गये हैं। जिनमें अनेक पूजा-विधानों को करके भगवान की भक्ति करने का अवसर मिल जाता है और फिर गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के द्वारा लिखी पूजाओं को करने से तो ''एक पंथ दो काज'' वाली सूक्ति चरितार्थ हो जाती है यानि भक्ति के साथ-साथ स्वाध्याय भी हो जाता है। अनेक छोटे-बड़े विधान पू. माताजी की लेखनी से प्रसूत हो चुके हैं और निरंतर यह क्रम जारी है। उसी क्रम में ''श्री श्रेयांसनाथ विधान'' नामक यह पुस्तक भी ग्रंथमाला के माध्यम से प्रकाशित होकर आप तक पहुँच रही है। यह विधान आप सबके लिये मंगल प्रदान करने वाला हो, यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैन धर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ भगवान ने सिंहपुरी में (वर्तमान में वाराणसी के पास सारनाथ से प्रसिद्ध) पिता विष्णुमित्र-माता नंदा के महल में फाल्गुन वदी ग्यारस को जन्म लिया और इस ही दिन दीक्षा को धारण किया। माघ कृ. अमावस को केवलज्ञान एवं श्रावण शु. पूर्णिमा को मोक्षलक्ष्मी का वरण किया। भगवान श्रेयांसनाथ के शरीर की ऊँचाई तीन सौ बीस हाथ, आयु चौरासी लाख वर्ष की एवं शरीर का वर्ण तपाये हुए स्वर्ण के सदृश देदीप्यमान था। भगवान श्रेयांसनाथ का चिन्ह गेंडा हैं। पंचकल्याणक से समन्वित तीन लोक के नाथ की महिमा का वर्णन अकथनीय है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 24 तीर्थंकरों के पृथक्-पृथक् विधानों की रचना की है जिसमें से यह ग्यारहवें तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ का विधान है। इस विधान में सर्वप्रथम मंगलाचरण एवं उसका पद्यानुवाद है। उसके बाद श्री श्रेयांसनाथ का स्तोत्र है जिसमें 4 पद्य में भगवान का जीवन चरित्र गागर में सागर के समान समाहित है–

है सिंहपुरी सुरनर पूजित, नृप विष्णुमित्र भगवंत पिता।
नंदा जननी आनंदकरणी, सब नारी को मंगल दाता।।
छठ ज्येष्ठ वदी में गर्भ बसे, फाल्गुन वदि ग्यारस में जन्में।
फाल्गुन वदि ग्यारस में प्रभु को, था वरण किया तप लक्ष्मी ने।।

स्तोत्र के बाद में अर्हंत पूजा है। अर्हंत पूजा के बाद भगवान श्री श्रेयांसनाथ जिन पूजा एवं पंचकल्याणक के अर्घ्य हैं। इसके बाद भगवान के 108 मंत्र के 108 अर्घ्य दिए हैं। 108 अर्घ्य के बाद 1 पूर्णार्घ्य और जाप्य मंत्र है। इस विधान की जयमाला में पूज्य माताजी ने लिखा है जो भगवान की भक्ति करते हैं, पूजा करते हैं, भगवान के सामने नृत्य करते हैं उन्हें क्या-क्या फल मिलते हैं—

जो तुम सन्मुख भक्ति भाव से, नृत्य करें हर्षित हों।
तांडव नृत्य करें उन आगे, सुरपति भी प्रमुदित हों।।

जो तुम गुण को नित्य उचरते, भवि उनके गुण गाते।
जो तुम सुयश सदा विस्तारें, वे जग में यश पाते।।4।।

इस विधान के अन्त में पूज्य माताजी ने भावना भाई हैं कि जो इस विधान को करेंगे, वे सर्वश्रेष्ठ सम्यक्त्व रूपी रत्न को प्राप्त कर इन्द्र, चक्रवर्ती आदि पद को प्राप्त करेंगे और फिर एक दिन केवलज्ञान रूपी ज्योति को भी प्राप्त कर लेंगे।

इसके बाद विधान की प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद मेरे द्वारा रचित सिंहपुरी तीर्थपूजा, भगवान श्री श्रेयांसनाथ की आरती, सिंहपुरी तीर्थ की आरती एवं भजन हैं।

यह विधान सभी के जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि को प्रदान करावे यही मंगल भावना है। विधान रचयित्री दिव्यशक्ति परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी स्वस्थ रहें एवं दीर्घायु प्राप्त करें, जिनेन्द्रदेव से ऐसी मंगल प्रार्थना है–

जिओ युग-युग हे माँ ज्ञानमती,
हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं।
रहो स्वस्थ चिरायु मातु श्री,
हम यही कामना करते हैं।।
पहले निज को तीर्थ बनाया, फिर तीर्थों की कीर्ति बढ़ाया।
त्वं जीव-नंद-वर्धस्व माँ,
हम यही कामना करते हैं।
जिओ युग-युग हे माँ ज्ञानमती,
हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

दो शब्द

–आर्यिका स्वर्णमती

श्रेयान् जिनः श्रेयसि वर्त्मनीमाः श्रेयः प्रजा शासदजेय-वाक्यः।
भवांश्चकासे भुवनत्रयेऽस्मिन् नेको यथा वीत-घनो विवस्वान्।।

बीसवीं सदी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले युगप्रवर्तक प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के 3 बार दर्शन करने वाली, उनसे अनुभव ज्ञान प्राप्त करने वाली, प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर ज्ञानमती नाम को सार्थक करने वाली, बीसवीं सदी की युगप्रवर्तिका, प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं।

पूज्य माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करते हुए अब तक लगभग 400 ग्रंथों की रचना की हैं जिनमें से अभी कुछ ग्रंथ अप्रकाशित हैं। आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान, स्तुति आदि सशक्त माध्यम हैं।

माताजी की लेखनी से लिखा गया एक–एक शब्द मोती की माला के समान सुशोभित है। पूज्य माताजी ने भगवान के सहस्रनाम मंत्र से लेखनी का शुभारम्भ किया। अष्टसहस्री ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद किया। षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ पर **'सिद्धान्त चिन्तामणि'** नाम से संस्कृत टीका 16 पुस्तकों की 3100 पृष्ठों में लिखकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। नियमसार ग्रंथ पर **'स्याद्वादचिन्तामणि'** नाम से संस्कृत टीका एवं समयसार ग्रंथ पर **'ज्ञानज्योति'** हिन्दी टीका लिखी है।

विधानों में इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, सिद्धचक्र, समवसरण, जम्बूद्वीप आदि बड़े विधानों के साथ–साथ शान्ति विधान आदि छोटे विधानों को मिलाकर 100 की संख्या में विधानों की रचना की है। 365 दिन में प्रतिदिन कहीं न कहीं पूज्य माताजी द्वारा रचित विधान होते ही रहते हैं। जम्बूद्वीप पर प्रतिदिन कोई न कोई विधान होता ही रहता है।

विधानों की श्रृंखला में यह **'श्री श्रेयांसनाथ विधान'** बहुत ही सुन्दर विधान है। विधानों के माध्यम से कर्मों की निर्जरा एवं पुण्य का आस्रव होता है। जिनमें अनंत गुण हैं ऐसे तीर्थंकर भगवान का गुणगान अनन्त गुणों को प्रदान करेगा।

पूज्य माताजी के ज्ञानगुण की पूजा करते हुए मैं यही भावना करती हूँ कि पूज्य माताजी के गुण मुझमें अवतरित हों। यह विधान मेरे जीवन में श्रुतज्ञान, केवलज्ञान को प्राप्त करावे, इसी मंगल भावना के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि–कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम, ग्वालियर में चिन्मामणि पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेद शिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ-मांगीतुंगी (2015) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	श्री श्रेयांसनाथ विधान	1
	मंगलाचरण	1
2.	श्री श्रेयांसजिन स्तोत्र	2
3.	श्री अर्हंत पूजा	3
4.	भगवान श्री श्रेयांसनाथ जिनपूजा	8
5.	108 अर्घ्य	11
6.	जयमाला	25
7.	प्रशस्ति	27
8.	श्रेयांसनाथ जन्मभूमि सिंहपुरी तीर्थ पूजा	
9.	भगवान श्री श्रेयांसनाथ की आरती	34
10.	सिंहपुरी तीर्थ की आरती	35
11.	भजन—विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा...	36

मण्डल विधान का नक्शा

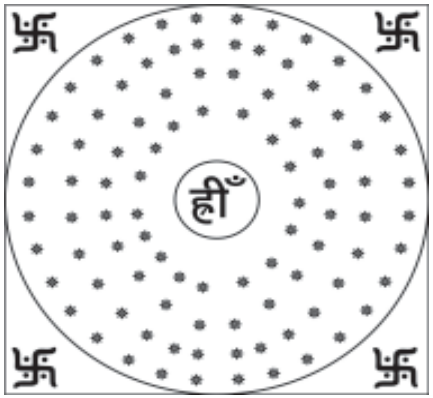

कुल पूजा–3, अर्घ्य 108, पूर्णार्घ्य–1, जयमाला–3।

श्री श्रेयांसनाथ विधान

मंगलाचरण

श्रेयस्करो जगत्यस्मिन्, भो श्रेयन् ! ते नमो नमः।
अन्वर्थनामधृत् देव! श्रेयो मे कुरुतात् सदा।।1।।

रूपं ते निरुपाधिसुन्दरमिदं पश्यन्सहस्रेक्षणः।
प्रेक्षाकौतुककारिकोऽत्र भगवन्नोपैत्यवस्थान्तरम्।।
वाणीं गदगद्यन्वपुः पुलकयन्नेत्रद्वयं स्रावयन्।
मूर्द्धानं नमयन्करौ मुकुलयंश्चेतोऽपि निर्वापयन्।।2।।

त्रिलोकराजेन्द्रकिरीटकोटि-प्रभाभिरालीढपदारविन्दम्।
निर्मूलमुन्मूलितकर्मवृक्षम् जिनेंद्रचंद्रं प्रणमामि भक्त्या।।3।।

(पद्यानुवाद)

सुन्दररूप उपाधि रहित तव, देख इंद्र भी अति हर्षित।
नेत्र हजार किये दर्शक, कौतुक कर भगवन् ! भक्तीवश।।
गद्गद वाणी पुलकित तनु, नेत्रों से आनंदाश्रु झरें।
मस्तक झुका हाथ युग जोड़ें, मन भी तुष्टी हर्ष धरे।।2।।

तीनलोक राजेन्द्र मुकुट, तटमणि की आभा से चुंबित।
जिनके चरण सरोरुह उत्तम, कांतिमान् चमके संतत।।

जिनने है जड़मूल उखाड़ा, कर्मवृक्ष ऐसे प्रभु जो।
जिनवर चन्द्र तुम्हें मैं प्रणमूं, भक्ति भाव से शिरनत हो।।3।।

श्री श्रेयांसजिन स्तोत्र

–शंभु छंद–

श्रेयस्कर चिच्चैतन्यात्मा, से प्रकटित अमृत को पीकर।
जो प्रभु श्रेयांस हुए जग में, वे मुझको भी हों श्रेयस्कर।।
श्रेयो अर्थी जो भविजन हैं तव चरण सरोरुह में नमते।
मैं भी श्रद्धा से नमूं सदा, नमते ही विघ्न कर्म भगते।।1।।

है सिंहपुरी सुरनर पूजित, नृप विष्णुमित्र भगवंत पिता।
नंदा जननी आनंदकरणी, सब नारी को मंगल दाता।।
छठ ज्येष्ठ वदी में गर्भ बसे, फाल्गुन वदि ग्यारस में जन्मे।
फाल्गुन वदि ग्यारस में प्रभु को, था वरण किया तप लक्ष्मी ने।।2।।

शुभ माघ अमावस में ज्ञानी, श्रावण पूर्णा को यम जीता।
तब सिद्धि कन्या ने आकर, प्रभु को लोकांत तरफ खींचा।।
पहले प्रभु ने प्रज्ञा असि से, नृप मोह का मस्तक काट लिया।
फिर ध्यान चक्र से मृत्यु को, मारा त्रिभुवन का राज्य लिया।।3।।

तनु तुंग तीन सौ बीस हाथ, आयु चौरासी लाख वर्ष।
तपनीय स्वर्णसम देह नाथ!, गेंडा लांछन से आप सहित।।
निज पर का भेद ज्ञान मेरा, दृढ़ हो ऐसी शक्ति दीजे।।
मैं स्वात्मसुधारस आनंद में, रम जाऊँ ऐसी मति दीजे।।4।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

पूजा नं. १

श्री अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंक पंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुची से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तू।
पीयूष तुल्य चरु लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नी विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।

मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बाहू हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।
जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सोहें।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवल रवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन, नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसु मंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चउ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभू सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा –

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

भगवान श्री श्रेयांसनाथ जिनपूजा

–अथ स्थापना-अडिल्लछंद –

श्री श्रेयांस जिन मुक्ति रमा के नाथ हैं।
त्रिभुवन पति से वंद्य त्रिजग के नाथ हैं।।
गणधर गुरु भी नमें नमाकर शीश को।
आह्वानन कर जजूँ नमाऊँ शीश को।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-भुजंगप्रयात छंद –

भरा नीर भृंगार में क्षीर जैसा, करूँ पाद में धार पीयूष जैसा।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसा गंध चंदन प्रभू पाद चर्चूं, सभी देह संताप मेटो जिनेंद्रा।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुले शालि के पुंज से नाथ पूजूँ, मिले पूर्ण आनंद जो नष्ट ना हो।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोगरा नीलवर्णी कमल हैं, चढ़ाते तुम्हें नाथ! होऊँ विमल मैं।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पूरियाँ और गुझिया समोसे, चढ़ाऊँ प्रभू को क्षुधा व्याधि नाशे।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।5।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा दीप की जगमगे ध्वांत नाशे, करूँ आरती भारती को प्रकाशे।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाऊँ अगनिपात्र में धूप अब मैं, जले कर्म की धूप फैले दिशा में।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास नींबू व अखरोट काजू, चढ़ाऊँ प्रभो! मोक्षफल हेतु फल ये।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिले नीर गंधादि चाँदी कुसुम भी, चढ़ाऊँ तुम्हें अर्घ्य हो 'ज्ञानमति' भी।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

श्रीजिनवर पदपद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुखसद्म, चउसंघ में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमामृत सुख लाभ, मिले निजातम संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–चौपाई छंद –

सिंहपुरी पितु विष्णूमित्र। नंदा माँ के गर्भ पवित्र।।
ज्येष्ठ कृष्ण छठ तिथि अभिराम। मैं पूजूँ इत गर्भ कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाषष्ठ्यां श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि फाल्गुन वदि ग्यारस जन्म। सुरपति किया मेरु पे न्हवन।।
सुरगण उत्सव करें अपार। जजत प्रभू को हर्ष अपार।।2।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋतु वसंत श्री विनशी जबे। बारह भावन भायी तबे।।
फाल्गुन वदि ग्यारस पूर्वाण्ह। जजूँ प्रभू का तप कल्याण।।3।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदी मावस अपराण्ह, तुंबुर तरु नीचे धर ध्यान।
पाँच सहस धनु अधर जिनेश, जजूँ ज्ञान कल्याण हमेश।।4।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णाअमावस्यायां श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि पूनो श्रेयांस, कर्म नाश करके शिवकांत।
गिरि सम्मेद पूज्य जग सिद्ध, नमूँ मोक्ष कल्याण प्रसिद्ध।।5।।
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लापूर्णिमायां श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

श्री श्रेयांस जिनेश के, चरण कमल सुखकार।
पूजूँ पूरण अर्घ्य ले, होऊँ भवदधि पार।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

108 अर्घ्य

–दोहा –

परमानंद पियूष घन, वर्षा करें जिनंद।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सर्वसुखकंद।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

भुजंगी-छंद

'असंस्कृतसुसंस्कार' नामा तुम्हीं।
बिना संस्कारे सुसंस्कृत तुम्हीं।।
जजूँ नाथ श्रेयांस को भक्ति से।
पिऊँ आत्म पीयूष भी युक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्काराय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्राकृत'[1] तुम्हीं तो स्वभावीक हो।
धरा अष्टमें वर्ष व्रत देश को।।जजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं अप्राकृताय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'वैकृतांतकृत', आप ही।
विकारादि दोषा विनाशा तुम्हीं।।जजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं वैकृतांतकृते श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अंतकृत' दुःख को नाशिया।
जनम मृत्यु का भी समापन किया।।जजूँ.।।4।।

ॐ ह्रीं अंतकृते श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'कांतगू' श्रेष्ठ वाणी धरो।
मुझे दो वचोसिद्धि ऐसा करो।।जजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं कांतगवे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. प्राकृत है आदि पु. में।

महारम्य सुंदर प्रभो! 'कांत' हो।
त्रिलोकीपती साधु में मान्य हो।।जजूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं कांताय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'चिंतामणी' रत्न हो।
सभी इच्छती वस्तु देते सदा।।जजूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं चिन्तामणये श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभीष्टद' अभीप्सित लहें भक्त ही।
मुझे दीजिये नाथ! मुक्ती मही।।जजूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं अभीष्टदाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न जीते गये हो 'अजित' आप हो।
प्रभो! मोह जीतूँ यही शक्ति दो।।जजूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं अजिताय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'जितकामअरि' लोक में।
विषय काम क्रोधादि जीता तुम्हीं।।जजूँ.।।10।।

ॐ ह्रीं जितकामारये श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमित' माप होता नहीं आपका।
अनंते गुणों की खनी आप हो।।जजूँ.।।11।।

ॐ ह्रीं अमिताय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमितशासना' धर्म अनुपम कहा।
मुझे आप सम नाथ कीजे अबे।।जजूँ.।।12।।

ॐ ह्रीं अमितशासनाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्रोध' हो आप शांती सुधा।
महा शांति से क्रोध जीता सभी।।जजूँ.।।13।।

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितामित्र' कोई न शत्रू रहा।
प्रभो! आप ही सर्व प्रिय लोक में।।जजूँ.।।14।।

ॐ ह्रीं जितामित्राय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्लेश' सब क्लेश जीता तुम्हीं।
सभी क्लेश मेरे निवारो अबे।।जजूँ.।।15।।

ॐ ह्रीं जितक्लेशाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितांतक प्रभो! मृत्यु को नाशिया।
समाधी मिले अंत में भी मुझे।।जजूँ.।।16।।

ॐ ह्रीं जितांतकाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'जिनेंद्र' हो विश्व में।
तुम्हीं श्रेष्ठ हो कर्मजयि साधु में।।जजूँ.।।17।।

ॐ ह्रीं जिनेंद्राय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप ही 'परमआनंद' हो।
मुझे आत्म आनंद दीजे अबे।।जजूँ.।।18।।

ॐ ह्रीं परमानंदाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'मुनींद्र' हो लोक में।
मुनीनाथ मानें नमें साधु भी।।जजूँ.।।19।।

ॐ ह्रीं मुनीन्द्राय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'दुंदुभीस्वन' ध्वनी आपकी।
सुगंभीर दुंदुभि सदृश ही खिरे।।जजूँ.।।20।।

ॐ ह्रीं दुंदुभिस्वनाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महेन्द्रासुवंद्या' प्रभो आप ही।
सभी इंद्र से वंद्य हो पूज्य हो।।जजूँ.।।21।।

ॐ ह्रीं महेन्द्रवंद्याय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'योगीन्द्र' हो विश्व में।
सभी ध्यानियों में तुम्हीं श्रेष्ठ हो।।जजूँ.।।22।।

ॐ ह्रीं योगीन्द्राय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'यतीन्द्रा' मुनी साधु में।
सदा श्रेष्ठ मानें गणाधीश में।।
जजूँ नाथ श्रेयांस को भक्ति से।
पिऊँ आत्म पीयूष भी युक्ति से।।23।।

ॐ ह्रीं यतीन्द्राय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'नाभिनंदन' तुम्हीं मान्य हो।
नृपति नाभि के पुत्र विख्यात हो।।जजूँ.।।24।।

ॐ ह्रीं नाभिनंदनाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'नाभेय' हो पूज्य हो।
महानाभिराजा से उत्पन्न हो।।जजूँ.।।25।।

ॐ ह्रीं नाभेयाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाराच-छंद

जिनेंद्र! आप 'नाभिजा' शतेंद्रवृन्द पूज्य हो।
त्रिलोक में महान् हो श्रेयांसनाथ सूर्य हो।।
मुनीन्द्र आप नाममंत्र ध्यावते सुध्यान में।
जजूँ सदैव मैं यहाँ लहूँ निजात्म धाम में।।26।।

ॐ ह्रीं नाभिजाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजात' हो जिनेश! जन्मशून्य आप सिद्ध हो।
मुझे प्रभो! भवाब्धि से निकालिये समर्थ हो।।मुनीन्द्र.।।27।।

ॐ ह्रीं अजाताय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'सुव्रत' आप श्रेष्ठ संयमादि धारियो।
महाव्रतादि पूर्ण कीजिये मुझे सुतारियो।।मुनीन्द्र.।।28।।

ॐ ह्रीं सुव्रताय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'मनू' समस्त कर्मभूमि को सुथापिया।
सर्वश्रेष्ठ जन्म लेय तीर्थ चक्र धारिया।।मुनीन्द्र.।।29।।

ॐ ह्रीं मनवे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'उत्तमा' त्रिलोक में महान श्रेष्ठ हो।
मुनीशवृन्द पूज्य हो असंख्य जीव ज्येष्ठ हो।।मुनीन्द्र.।।30।।
ॐ ह्रीं उत्तमाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभेद्य' हो किन्हीं जनों से छेद भेद योग्य ना।
समस्त जन्म मृत्यु रोग नाश के सुखी घना।।मुनीन्द्र.।।31।।
ॐ ह्रीं अभेद्याय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनत्ययो' न नाश हो अनंत काल आपका।
मुझे सुखी सदा करो न अंत हो सुज्ञान का।।मुनीन्द्र.।।32।।
ॐ ह्रीं अनत्ययाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनाशवान्' भोजनादि से विहीन आप हैं।
महान तप किया प्रभो समस्त वीश्वास्य हैं।।मुनीन्द्र.।।33।।
ॐ ह्रीं अनाश्वते श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अधीक' उत्कृष्ट आत्मा तुम्हीं कहे।
सुपाय वास्तवीक सौख्य को 'अधिक' तुम्हीं रहे।।मुनीन्द्र.।।34।।
ॐ ह्रीं अधिकाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक के गुरू 'अधीगुरू' तुम्हीं महान हो।
नमाय माथ को सदा सुआप को प्रणाम हो।।मुनीन्द्र.।।35।।
ॐ ह्रीं अधिगुरुवे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुगी' सुवाणि आपकी अतीव शोभना कही।
अनंत दुःख से निकाल मोक्ष में धरे वही।।मुनीन्द्र.।।36।।
ॐ ह्रीं सुगिरे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुमेधसा' महान् बुद्धि से सुकेवली भये।
प्रभो! अपूर्व ज्ञान दो अनंत गुण मिले भये।।मुनीन्द्र.।।37।।
ॐ ह्रीं सुमेधसे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पराक्रमी समस्त कर्म नाश हेतु शूर हो।
अतेव 'विक्रमी' कहावते अपूर्व सूर्य हो।।
मुनीन्द्र आप नाममंत्र ध्यावते सुध्यान में।
जजूँ सदैव मैं यहाँ लहूँ निजात्म धाम मैं।।38।।
ॐ ह्रीं विक्रमिणे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक 'स्वामि' हो समस्त भव्य जीव पालते।
अनंत धाम में धरो भवाब्धि से निकालते।।मुनीन्द्र.।।39।।
ॐ ह्रीं स्वामिने श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुरादिधर्ष' कोई ना अनादरादि कर सके।
प्रभो! तुम्हीं समस्त भव्य बन्धु हो जगत् विषे।।मुनीन्द्र.।।40।।
ॐ ह्रीं दुराधर्षाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'निरुत्सुको' तुम्हीं समस्त आश शून्य हो।
सुमुक्तिवल्लभा विषे हि औत्सुक्य पूर्ण हो।।मुनीन्द्र.।।41।।
ॐ ह्रीं निरुत्सुकाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विशिष्ट' आप ही विशेष रूप श्रेष्ठ विश्व में।
गणीन्द्र शीश नावते न फेर विश्व में भ्रमें।।मुनीन्द्र.।।42।।
ॐ ह्रीं विशिष्टाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'शिष्टभुक्' तुम्हीं सुसाधुलोक पालते।
अनिष्ट को निकाल सत्य ज्ञान आप धारते।।मुनीन्द्र.।।43।।
ॐ ह्रीं शिष्टभुजे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश 'शिष्ट' श्रेष्ठ आचरण तुम्हीं धरा यहाँ।
अशेष मोहशत्रु नाश के अनिष्ट को दहा।।मुनीन्द्र.।।44।।
ॐ ह्रीं शिष्टाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'प्रत्ययो' प्रतीति योग्य आप एकही।
समस्त ज्ञानरूप हो पुनीत पुण्यरूप ही।।मुनीन्द्र.।।45।।
ॐ ह्रीं प्रत्ययाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरम्य 'कामनो' प्रभो! त्रिलोक चित्तहारि हो।
न आपके समान रूप इंद्र नेत्रहारि हो।।मुनीन्द्र.।।46।।

ॐ ह्रीं कामनाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनघ' जिनेश! पापहीन पुण्य के निधान हो।
अनंत जीवराशि आपको नमें प्रणाम हो।।मुनीन्द्र.।।47।।

ॐ ह्रीं अनघाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेंद्र! 'क्षेमि' सर्वक्षेम युक्त आप विश्व में।
समस्त रोग शोक दुःख मेट दो तुम्हें नमें।।मुनीन्द्र.।।48।।

ॐ ह्रीं क्षेमिणे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'क्षेमंकरो' त्रिलोक क्षेमकारि हो।
दरिद्र दुःख मेट सौख्य दो सदैव भारि हो।।मुनीन्द्र.।।49।।

ॐ ह्रीं क्षेमंकराय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'अक्षयो' तुम्हीं सदैव क्षय विहीन हो।
मुझे अखंडधाम दो सदा स्वयं अधीन जो।।मुनीन्द्र.।।50।।

ॐ ह्रीं अक्षताय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री छंद

'क्षेमधरमपति' क्षेम करो हो।
सर्व अमंगल दोष हरो हो।।
प्रभु श्रेयांस जजूँ मन लाके।
सर्व अमंगल दूर भगा के।।51।।

ॐ ह्रीं क्षेमधर्मपतये श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'क्षमी' सुसहिष्णु कहे हो।
श्रेष्ठ क्षमा उपदेश रहे हो।।प्रभु.।।52।।

ॐ ह्रीं क्षमिने श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप जिनेश! 'अग्राह्य' कहाते।
अल्प सुज्ञानी जान न पाते।।प्रभु.।।53।।

ॐ ह्रीं अग्राह्याय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञान निग्राह्य' प्रभो! जग में हो।
ज्ञान स्वसंविद से ग्रह ही हो।।
प्रभु श्रेयांस जजूँ मन लाके।
सर्व अमंगल दूर भगा के।।54।।

ॐ ह्रीं ज्ञाननिग्राह्याय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानसुगम्य' सुध्यान करें जो।
नाथ तभी तुम जान सके वो।।प्रभु.।।55।।

ॐ ह्रीं ज्ञानगम्याय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! निरुत्तर आप कहे हो।
सर्व जगत् उत्कृष्ट भये हो।।प्रभु.।।56।।

ॐ ह्रीं निरुत्तराय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुकृती' तुम पुण्य धरन्ता।
पुण्य करें जन भक्ति करन्ता।।प्रभु.।।57।।

ॐ ह्रीं सुकृतिने श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धातु' तुम्हीं सब शब्द जनंता।
चिन्मय धातु तनू भगवंता।।प्रभु.।।58।।

ॐ ह्रीं धातवे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! तुम्हीं 'इज्यार्ह' कहाये।
इन्द्र मुनी गण पूज्य सुगाये।।प्रभु.।।59।।

ॐ ह्रीं इज्यार्हाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'सुनय' सहपेक्ष नयों से।
सत्य सुधर्म कहा अति नीके।।प्रभु.।।60।।

ॐ ह्रीं सुनयाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीसुनिवास' तुम्हीं प्रभु माने।
सम्पति धाम तुम्हें मुनि जाने।।प्रभु.।।61।।

ॐ ह्रीं श्रीसुनिवासाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! तुम्हीं 'चतुरानन' ब्रह्मा।
दीख रहे मुख चार सभा मा।।प्रभु.।।62।।

ॐ ह्रीं चतुराननाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चतुर्वक्त्र' तुमको सुर पेखे।
नाथ! समोसृति में तुम देखें।।प्रभु.।।63।।

ॐ ह्रीं चतुर्वक्त्राय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'चतुरास्य' तुम्हें भवि वंदे।
जन्म जरामृति तीनहिं खंडे।।प्रभु.।।64।।

ॐ ह्रीं चतुरास्याय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'चतुर्मुख' चौमुख धर्ता।
द्वादश गण जनता मन हर्ता।।प्रभु.।।65।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यात्मा' प्रभु सत्य स्वरूपी।
दिव्यध्वनी मय वाक्य निरूपी।।प्रभु.।।66।।

ॐ ह्रीं सत्यात्मने श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यविज्ञान' प्रभो! तुम ही हो।
केवलज्ञान लिये चिन्मय हो।।प्रभु.।।67।।

ॐ ह्रीं सत्यविज्ञानाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसुवाक्' प्रभो सतभंगी।
वाक्यसुधा तुम गंगतरंगी।।प्रभु.।।68।।

ॐ ह्रीं सत्यवाचे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसुशासन' नाथ तुम्हारा।
भव्य जनों हित एक सहारा।।प्रभु.।।69।।

ॐ ह्रीं सत्यशासनाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्याशिष्' शुभ आशिस् देते।
सर्व अमंगल भी हर लेते।।प्रभु.।।70।।

ॐ ह्रीं सत्याशिषे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसुसन्धान' सुविभु नामा।
सत्य प्रतिज्ञ तुम्हें सुर माना।।
प्रभु श्रेयांस जजूँ मन लाके।
सर्व अमंगल दूर भगा के।।71।।

ॐ ह्रीं सत्यसंधानाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्य' प्रभो! तुम सत्पथदर्शी।
भव्य जनों हित वाक्य प्रदर्शी।।आप.।।72।।

ॐ ह्रीं सत्याय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यपरायण' नाथ! हितैषी।
तीन जगत के हित उपदेशी।।प्रभु.।।73।।

ॐ ह्रीं सत्यपरायणाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थेयान्' प्रभु नित स्थिर हो।
नाथ! मुझ स्थिर धाम दिला दो।।प्रभु.।।74।।

ॐ ह्रीं स्थेयसे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थवीयान्' प्रभु आप बड़े हो।
सर्वगणी गण में भि बड़े हो।।प्रभु.।।75।।

ॐ ह्रीं स्थवीयसे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तोटक छंद

प्रभु 'नेदिययान' निज भक्तन के।
अति सन्निधि हो मन में बसते।।
तुम नाम सुमंत्र जपूँ नित ही।
भव वारिध पार करो अब ही।।76।।

ॐ ह्रीं नेदीयसे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'दवीयान्' पाप हना।
निज आत्म सुधारस पीय घना।।तुम.।।77।।

ॐ ह्रीं दवीयसे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'दूरसुदर्शन' हो तुम ही।
अणुरूप नहीं मुनि के मन ही।।तुम.।।78।।

ॐ ह्रीं दूरदर्शनाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम नाथ! 'अणोरणियान्' कह्यो।
अति सूक्षम योगि सुगोचर हो।।तुम.।।79।।

ॐ ह्रीं अणोरणीयसे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनणू' तुम ज्ञान शरीर कहे।
अणु-पुद्गल नाहिं महान् कहें।।तुम.।।80।।

ॐ ह्रीं अनणवे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुरुराद्यगरीयस' के जग में।
गुरुओं मधि श्रेष्ठ गुरू प्रभु हैं।।तुम.।।81।।

ॐ ह्रीं गरीयसमाद्यगुरवे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदयोग' सदा तुम योग धरा।
सब योगि सदा तुम ध्यान धरा।।तुम.।।82।।

ॐ ह्रीं सदायोगाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदभोग' सुपुष्प सदा बरसें।
सुर दुंदुभि आदि करें हरसें।।तुम.।।83।।

ॐ ह्रीं सदाभोगाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदतृप्त' सदाप्रभु तृप्त रहो।
क्षुध प्यास नहीं प्रभु तुष्ट रहो।।तुम.।।84।।

ॐ ह्रीं सदातृप्ताय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सदाशिव' हो जग में।
नहिं कर्म कलंक छुआ तुमने।।तुम.।।85।।

ॐ ह्रीं सदाशिवाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सदागति' ज्ञानमयी।
गति पंचम मोक्ष लिया तुमही।।तुम.।।86।।

ॐ ह्रीं सदागतये श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदसौख्य' सदा प्रभु सौख्य लह्यो।
सब सात असात सुखादि हर्‌यो।।
तुम नाम सुमंत्र जपूँ नित ही।
भव वारिध पार करो अब ही।।87।।

ॐ ह्रीं सदासौख्याय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सदाविद्य' हो इस जग में।
शुचि केवलज्ञान धरो निज में।।तुम.।।88।।

ॐ ह्रीं सदाविद्याय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिननाथ! 'सदोदय' आप रहें।
नित उदितरूप रवि आप कहें।।तुम.।।89।।

ॐ ह्रीं सदोदयाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वनि उत्तम नाथ! 'सुघोष' तुम्हीं।
इक योजन जीव सुनें सबहीं।।तुम.।।90।।

ॐ ह्रीं सुघोषाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुमुख' सुंदर मुख हो।
विकसंत कमल मंदस्मित हो।।तुम.।।91।।

ॐ ह्रीं सुमुखाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सौम्य' तुम्हीं शशि सुन्दर हो।
तुम गावत गीत पुरंदर हो।।तुम.।।92।।

ॐ ह्रीं सौम्याय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुखदं' सब जीव शुभंकर हो।
सुखदायि जिनेश्वर आपहि हो।।तुम.।।93।।

ॐ ह्रीं सुखदाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुहितं' प्रभु सर्वहितंकर हो।
मुझको निज दास करो शिव हो।।तुम.।।94।।

ॐ ह्रीं सुहिताय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुहृत्' सबके मितु हो।
मुझ चित्त बसो सबही वश हों।।तुम.।।95।।

ॐ ह्रीं सुहृदे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुगुप्त' सुरक्षित हो।
तुम भक्त सभी अरि रक्षित हों।।तुम.।।96।।

ॐ ह्रीं सुगुप्ताय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'गुप्तिभृता' त्रयगुप्ति धरी।
तुम भक्ति किया मुझ धन्य धरी।।तुम.।।97।।

ॐ ह्रीं गुप्तिभृते श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'गोप्ता' रक्षक हो जग के।
मुझ पे अब नाथ कृपा कर दे।।तुम.।।98।।

ॐ ह्रीं गोप्त्रे श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकअध्यक्ष' त्रिलोकपती।
मुझ व्याधि उपाधि हरो जलदी।।तुम.।।99।।

ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'दमेश्वर' हो नित ही।
सब इंद्रिय जीत अतीन्द्रिय ही।।तुम.।।100।।

ॐ ह्रीं दमेश्वराय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

प्रभु 'धीमान' त्रिलोक में, पंचमज्ञान समेत।
स्वात्मज्ञान संपत्ति दो, नमूँ आप भव सेतु।।101।।

ॐ ह्रीं धीमते श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शेमुषीश' त्रिभुवनपती, ज्ञान अनंत अपार।
ज्ञानज्योति देकर प्रभो! करिये मुझ उद्धार।।102।।

ॐ ह्रीं शेमुषीशाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'गिरांपति' मान्य हो, दिव्यध्वनी के ईश।
सत्यमहाव्रत पूरिये, नमूँ नमूँ नत शीश।।103।।

ॐ ह्रीं गिरांपतये श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकरूप' शिव बुद्ध तुम, ब्रह्मा विष्णु जिनेश।
नमत मिले समरस सुधा, परमानंद हमेश।।104।।

ॐ ह्रीं नैकरूपाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नयोत्तुंग' नय सप्तविध, नानाविध स्याद्वाद।
अनेकांत मत को कहा, नमत साम्यरस स्वाद।।105।।

ॐ ह्रीं नयोत्तुंगाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकात्मा' आनन्त्य गुण, धरें आप अविरुद्ध।
नमत मिले गुण संपदा, कर्मास्रव हों रुद्ध।।106।।

ॐ ह्रीं नैकात्मने श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकधर्मकृत' मुनिधरम, श्रावक धर्म प्रकाश।
भवसमुद्र से तारते, भविजन कमल विकास।।107।।

ॐ ह्रीं नैकधर्मकृते श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अविज्ञेय' सामान्य जन तुमको जाने नाहिं।
साधु ध्यान से जानते, बसो मेरे मन माहिं।।108।।

ॐ ह्रीं अविज्ञेयाय श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

प्रभु असंस्कृतादि से इक सौ, आठ जजें जो मंत्र सदा।
सब भूत पिशाच उपद्रव भी, नश जांय सभी नशती विपदा।।
ज्वर कुष्ठ भगंदर कामल आदिक, रोग सभी नशते क्षण में।
पूर्णार्घ चढ़ाकर वंदत हूँ, प्रभु आप बसो नित मुझ मन में।।1।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्कारादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रसमन्विताय श्रीश्रेयांसनाथ–तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय नमः।**

(सुगन्धित पुष्पों से, लौंग या पीले चावल से 108 बार
या 27 बार या 9 बार जाप्य करें)

जयमाला

–सोरठा –

नित्य निरंजन नाथ, परम हंस परमात्मा।
तुम गुणमणि की माल, धरूँ कंठ में मैं सदा।।1।।

–नरेंद्र छंद –

चिन्मय ज्योति चिदंबर चेतन, चिच्चैतन्य सुधाकर।
जय जय चिन्मूरति चिंतामणि, चिंतितप्रद रत्नाकर।।
आप अलौकिक कल्पवृक्ष प्रभु, मुंह मांगा फल देते।
आप भक्त चक्री सुरपति, तीर्थंकर पद पा लेते।।2।।

जो तुम चरण सरोरुह पूजें, जग में पूजा पावें।
जो जन तुमको चित में ध्याते, सब जन उनको ध्यावें।।
जो तुम वचन सुधारस पीते, सब उनके वच पालें।
जो तुम आज्ञा पालें भविजन, उन आज्ञा नहिं टालें।।3।।

जो तुम सन्मुख भक्ति भाव से, नृत्य करें हर्षित हों।
तांडव नृत्य करें उन आगे, सुरपति भी प्रमुदित हों।।
जो तुम गुण को नित्य उचरते, भवि उनके गुण गाते।
जो तुम सुयश सदा विस्तारें, वे जग में यश पाते।।4।।

मन से भक्ति करें जो भविजन, वे मन निर्मल करते।
वचनों से स्तुति को पढ़कर, वचन सिद्धि को वरते।।
काया से अंजलि प्रणमन कर, तन का रोग नशाते।
त्रिकरण शुचि से वंदन करके, कर्म कलंक नशाते।।5।।

कुंथु आदि गण ईश सतत्तर, सात ऋद्धि के धारी।
मुनि निर्ग्रंथ सहस चौरासी, सातभेद गुणधारी।।

प्रमुख धारणा आदि आर्यिका, बीस सहस इक लक्षा।
दोय लाख श्रावक व श्राविका, चार लाख गुणदक्षा।।6।।

आयु चुरासी लाख वर्ष की, अस्सी धनुष तनू है।
तप्त स्वर्ण छवि तनु अतिसुंदर, गेंडा चिन्ह सहित हैं।।
प्रभु श्रेयांस विश्व श्रेयस्कर, त्रिभुवन मंगलकारी।
प्रभु तुम नाम मंत्र ही जग में, सकल अमंगलहारी।।7।।

बहु विध तुम यश आगम वर्णे, श्रवण किया मैं जब से।
तुम चरणों में प्रीति लगी है, शरण लिया मैं तब से।।
प्रभु श्रेयांस! कृपा ऐसी अब, मुझे पर तुरतहिं कीजे।
सम्यग्ज्ञानमती लक्ष्मी को, देकर निजसम कीजे।।8।।

–दोहा –

परमश्रेष्ठ श्रेयांस जिन, पंचकल्याणक ईश।
नमूँ नमूँ तुमको सदा, श्रद्धा से नत शीश।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

–शेरछंद–

जो श्री श्रेयांसनाथ का विधान करेंगे।
सम्यक्त्वरत्न सर्वश्रेष्ठ प्राप्त करेंगे।।
संपूर्ण श्रेय पाय इंद्र चक्रि बनेंगे।
कैवल्य ज्ञानमती रवि उद्योत करेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

वृषभदेव से वीर तक, श्री चौबीस जिनेश।
नमूँ नमूँ उनको सदा, मिटे सकल भव क्लेश।।1।।

मूल संघ आचार्य श्री, कुंदकुंद गुरुदेव।
इनके अन्वय में हुआ, चतुःसंघ दुःख छेव।।2।।

बलात्कार गण भारती, गच्छ प्रसिद्ध महान।
इसमें सूरीश्वर हुए, शांतिसिंधु गुणखान।।3।।

वीरसागराचार्य थे, उनके पट्टाधीश।
आर्यिका दीक्षा दिया, किया कृतार्थ मुनीश।।4।।

शांति कुंथु अरनाथ की, जन्म भूमि जगतीर्थ।
कुरुजांगल शुभ देश में, हस्तिनागपुर तीर्थ।।5।।

श्री श्रेयांस जिनेश का, यह विधान सुखकार।
गणिनी ज्ञानमती रचा, सर्व श्रेय करतार।।6।।

जो भवि नित पूजा करें, पढ़ें सुनें एकाग्र।
इंद्र चक्रि सुख भोग के, वे पहुँचे लोकाग्र।।7।।

यावत् जग में मेरु हैं, यावत् श्री जिनधर्म।
यह विधान भवि लोक को, तब तक दे शिव शर्म।।8।।

इति श्रीश्रेयांसनाथविधानं संपूर्णम्।
जैनं जयतु शासनम्।

पूजा नं. ३
श्रेयांसनाथ जन्मभूमि सिंहपुरी तीर्थ पूजा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

अडिल्ल छन्द

सिंहपुरी श्रेयाँसनाथ जन्मस्थली।
है प्रसिद्ध जो सारनाथ पुण्यस्थली।।
उसकी पूजन हेतु करूँ स्थापना।
तीरथ अर्चन से होगा हित आपना।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्र!अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठः ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (सखी छन्द)

प्रासुक जल से भर झारी, कर धार मिटे भ्रम भारी।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन लाया, चर्चत भवताप नशाया।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय संसार-तापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गजमोती सम अक्षत हैं, अर्चत लूँ अक्षय पद मैं।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों को चुन-चुन लाऊँ, भर अंजलि नाथ चढ़ाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान अनेक बनाये, पूजन हेतू ले आये।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप कपूर जलाऊँ, आरति कर पुण्य बढ़ाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु धूप बनाई, अग्नी में उसे जलाई।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि फल लाऊँ, शिवफल हित उन्हें चढ़ाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों को मिलाया, ''चन्दना'' प्रभू को चढ़ाया।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल से करूँ शान्तीधारा, हो शांत जगत यह सारा।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।10।।

शान्तये शांतिधारा

उपवन से पुष्प मंगाऊँ, पुष्पांजलि कर सुख पाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वंदन।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

सिंहपुरी तीर्थ के अर्घ्य (शंभु छन्द)

जिस सिंहपुरी में विष्णुमित्र, राजा ने राज्य किया सुंदर।
देवों की टोली आती थी, जिनकी रानी नंदा के घर।।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी को, श्री श्रेयांस गर्भ में आये थे।
मैं उस नगरी को नमूँ जहाँ, धनपति ने रतन बरसाये थे।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथगर्भकल्याणकपवित्रसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि फाल्गुन वदि ग्यारस को जहाँ, श्रेयाँसनाथ का जन्म हुआ।
सुरपति ने मेरु सुदर्शन पर, कर न्हवन जन्म निज धन्य किया।।
फिर सिंहपुरी में लाकर के, जन्मोत्सव पुनः मना डाला।
उस भू को अर्घ्य चढ़ा मैंने , निज जीवन सफल बना डाला।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मकल्याणकपवित्रसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपभोग राज्यवैभव का कर, वैराग्य जहाँ मन में आया।
जहाँ पर बसंतऋतु नाश देख, प्रभु ने दीक्षा पथ अपनाया।।
उस सिंहपुरी में फाल्गुन वदि, ग्यारस को तपकल्याण हुआ।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमन करूँ, तो मेरा भी कल्याण हुआ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघ वदी नवमी को जहाँ, जिनवर को केवलज्ञान हुआ।
श्रेयाँसनाथ तीर्थंकर ने, तुंबुरु तरु नीचे ध्यान किया।।
उस सिंहपुरी को सारनाथ के, नाम से जाना जाता है।
जो अर्घ्य चढ़ाकर जजे इसे, श्रुतज्ञान उसे मिल जाता है।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छन्द)

श्रेयाँसनाथ के गर्भ जन्म तप, ज्ञान चार कल्याण जहाँ।
वह सिंहपुरी है धन्य तथा, सम्मेदशिखर निर्वाण हुआ।।
चारों कल्याणक से पवित्र, श्रीसिंहपुरी को वंदन है।
पूर्णार्घ्य समर्पित कर चाहूँ, तीरथपूजन का शुभ फल मैं।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयासँनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणकपवित्र–सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – ॐ ह्रीं सिंहपुरीजन्मभूमिपवित्रीकृत–श्रीश्रेयाँसनाथतीर्थंकराय नमः।

जयमाला

तर्ज-आओ बच्चों.....

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, तीर्थ यजन को आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल बनाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन ।।टेक.।।
बड़े पुण्य से तीर्थंकर प्रभु, जन्म धरा पर लेते हैं।
अपनी पावनता से वे जग, को पावन कर देते हैं।।
उनकी पदरज पाने हेतु, तीर्थ यजन को आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल बनाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।1।।

ढाई द्वीपों में इक सौ, सत्तर जो कर्मभूमियाँ हैं।
वे तीर्थंकर के जन्मों से, बनती धर्मभूमियाँ हैं।।
इसीलिए वे जन्मक्षेत्र, साक्षात तीर्थ कहलाये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।2।।

जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र का, आर्यखण्ड जो पहला है।
उसमें जन्मे चौबिस तीर्थंकर का परिचय करना है।।

उनकी जन्मभूमियों को हम, वन्दन करने आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।3।।

ग्यारहवें तीर्थंकर श्रीश्रेयाँसनाथ को नमन करूँ।
चारकल्याणक से पावन, उनके जन्मस्थल को प्रणमूँ।।
अतिशयकारी प्रतिमा के, दर्शन भक्तों ने पाये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।4।।

जहाँ प्रभू ने राजा बनकर, राजनीति सिखलाई थी।
धर्मनीति के साथ जहाँ पर, न्यायनीति बतलाई थी।
होते ही वैराग्य जहाँ, लौकान्तिक सुरगण आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।5।।

ध्यानलीन हो जहाँ प्रभू ने, कर्म घातिया नष्ट किया।
दिव्यध्वनि सुन जहाँ प्राणियों, ने मिथ्यातम ध्वस्त किया।।
उस श्रेयासँनाथ धर्मस्थल का यश गाने आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।6।।

हे स्वामी! इस कलियुग में, सम्यक्त्व जहाँ अतिदुर्लभ है।
वहीं आपकी भक्ति से, भक्तों को मिलता सब कुछ है।।
इसीलिए ''चन्दनामती'', हम अर्घ्य सजाकर लाये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।7।।

दोहा

सिंहपुरी की अर्चना, करे चमत्कृत लाभ।
जिन प्रतिमा की वन्दना, हरे सभी दुख व्याधि।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की शृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

।। इत्याशीर्वादः।।

भगवान श्री श्रेयांसनाथ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–इह विधि मंगल आरति.....

प्रभु श्रेयांस की आरति कीजे,
भव-भव के पातक हर लीजे ।।टेक.।।

स्वर्ण वर्णमय प्रभा निराली,
मूर्ति तुम्हारी है मनहारी।।प्रभु.....।।1।।

सिंहपुरी में जब तुम जन्में,
सुरगण जन्मकल्याणक करते।।प्रभु...।।2।।

विष्णुमित्र पितु, नन्दा माता,
नगरी में भी आनन्द छाता।।प्रभु.....।।3।।

फाल्गुन वदि ग्यारस शुभ तिथि थी,
जब प्रभुवर ने दीक्षा ली थी।।प्रभु.....।।4।।

माघ कृष्ण मावस को स्वामी
कहलाए थे केवलज्ञानी।।प्रभु.....।।5।।

श्रावण सुदी पूर्णिमा आई,
यम जीता शिवपदवी पाई।।प्रभु.....।।6।।

श्रेय मार्ग के दाता तुम हो,
जजे ''चंदनामति'' शिवगति दो।।प्रभु.....।।7।।

सिंहपुरी तीर्थ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–जहाँ डाल-डाल पर.....

श्री सिंहपुरी पावन तीरथ की आरति को हम आए।
कंचन का थाल सजाएँ।।टेक.।।

है पुण्य बड़ा जो तीर्थंकर प्रभु, जन्म धरा पर लेते।
अपनी पावनता से वे जग भर, को पावन कर देते।।हाँ....
उनकी पदरज पाने हेतु, हम तीर्थ नमन को आए,
कंचन का थाल सजाएँ।।1।।

श्रेयांसनाथ ग्यारहवें प्रभुवर, इसी धरा पर जन्में।
पितु विष्णुमित्र माता नंदा के, संग इन्द्रगण हरषे।।हाँ.....
हुए चार-चार कल्याण जहाँ, उस तीर्थभूमि को ध्याएं,
कंचन का थाल सजाएँ।।2।।

प्राचीन यहाँ इक मंदिर.2 है, श्रेयांसनाथ जिनवर का।
मनहारी प्रतिमा श्यामवर्ण, अतिशय है उन प्रभुवर का।।अतिशय....
है निकट बनारस तीर्थक्षेत्र, उसकी आरति को आए,
कंचन का थाल सजाएँ।।3।।

इस नगरी को अब सारनाथ के, नाम से जाना जाता।
श्रेयांसनाथ धर्मस्थल इसको, कहें ज्ञानमति माता।।हाँ.....
''चंदनामती'' भी ज्ञानप्राप्ति हित, चरण कमल प्रभु ध्याए।
कंचन का थाल सजाएँ।।4।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-देख तेरे संसार.....

विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा बनी है आलीशान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।टेक.।।
मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में।
पर्वत के पाषाण खण्ड में।।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माता की प्रेरणा महान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।1।।
ऋषभदेव प्रतिमा प्रगटी है।
गुरुमाता की तपशक्ती है।।
उनका गौरवमय ससंघ सानिध्य मिला है महान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।2।।
इक सौ अठ फुट की यह प्रतिमा।
जिनशासन की अद्भुत गरिमा।।
यह आश्चर्य प्रथम है जग में जैनधरम की शान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।3।।
यह है आयडल ऑफ अहिंसा।
भारत की पहचान अहिंसा।।
इसे ''चन्दनामती'' हृदय से कर लो सभी प्रणाम,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।4।।
श्री रवीन्द्रकीर्ति का समर्पण।
भक्तों का अर्थाञ्जलि अर्पण।।
अमर रहेगा युग युग तक सबका तन मन धन दान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।5।।